व्यग्र पाण्डे

# पहलगाम (कश्मीर ) के प्राकृतिक सौंदर्य पर

सुंदर पहाड़ गिरते झरने
चंचल नदियों का न्यारा स्वर
बिखरी घास गलीचे सी
प्यारे प्यारे से सुंदर घर ।
इक नज़र में ही सम्मोहन
कर देती जिसकी सुंदरता
छोड़े झपकना आंखें सब
बस लगती इसकी ये ही खता ।
पर सुंदरता को दाग लगा
पहलगाम की घाटी में
बिखरे हैं शूल बबूलों के
केसर की प्यारी माटी में ।

जैसे शिकारी जाल बिछा
कुछ अनाज के दाने डालते हैं
फंस जायें अबोध पंछी उसमें
इस तरह की मंशा पालते हैं ।
सुंदरता को जाल बनाकरके
बैठे हैं शिकारी आ करके
अलग-अलग काम वेशभूषा
रहते हैं स्वयं को छुपा करके ।
उस सुंदरता के पीछे का
चेहरा विभत्स भयानक है
जो हमदर्द बनते हैं वहां
वो भी बड़े खलनायक हैं ।
इसलिए ना प्राण गंवाना है
अभी सोच समझकर जाना है
ना समझ पाये हैं हम सभी
वहां अलग ही ताना-बाना है ।
दिखने में परिवर्तन लगता
पर परिवर्तन कोसों दूर अभी
प्रयासों में निरंतरता रखनी है
खिलेंगे अमन के फूल कभी ।